हमारे पास क्षेत्र के विकास के रोडमैप की नई रणनीति : कमलेश्वर

बेरोजगारी दूर करना एवं मंहगाई पर नियंत्रण मुख्य कार्य रहेगा

सीधी. हमारे पास जनता की शक्ति है और भाजपा के पास तंत्र एवं पैसे की शक्ति है. यह चुनाव भाजपा के पैसे और नागरिकों की गरिमा के बीच है. क्षेत्र के विकास के लिए एक सुविचारित रणनीति चाहिए. हमारे पास विकास के रोडमैप की नई रणनीति के साथ बेरोजगारी दूर करना एंव मंहगाई पर नियंत्रण करना मुख्य कार्य रहेगा. नवभारत से खास मुलाकात में सीधी लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी कमलेश्वर पटेल ने नवभारत के सवालों के जबाब देते हुये उक्त बातें कही.

सवाल – जबाव के मुख्य अंश

नवभारत – आपका लोकसभा चुनाव लड़ने का यह पहला अवसर है. विधानसभा और लोकसभा चुनाव में क्या अंतर लग रहा है ?

कमलेश्वर पटेल – लोकसभा का चुनाव देश के सामने जो मुख्य मुद्दे हैं उन पर लड़ा जाता है और उन पर ही वोट पड़ते हैं .विधानसभा चुनाव में स्थानीय मुद्दे प्रमुख होते हैं. भाजपा ने तो विधानसभा का चुनाव भी प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे पर लड़ा था. यह लोकसभा चुनाव इन अर्थों में महत्वपूर्ण है कि देश के सामने जो सबसे बड़े मुद्दे हैं उस पर मोदी सरकार ने कोई काम नहीं किया. इसके कारण आज महंगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दों ने इतना विशाल रूप ले लिया कि अब उनसे निपटना मुश्किल हो रहा है.

नवभारत – आपका जिला प्रदेश और विंध्य के सबसे पिछड़े जिले में एक है यदि जनता ने नेतृत्व करने का अवसर दिया तो आप की दृष्टि में विकास का स्वरूप क्या होगा ?

कमलेश्वर पटेल– देखिए विकास के लिए एक सुविचारित रणनीति चाहिए .हमारे पास रणनीति है. विकास का एक नया रोडमैप हमारे पास है जिसमें बेरोजगारी दूर करना और महंगाई पर नियंत्रण करना मुख्य कार्य है.

नवभारत – भाजपा की चुनावी रणनीति से कैसे मुकाबला करेंगे ?

कमलेश्वर पटेल – भाजपा की कोई चुनावी रणनीति नहीं है. उनकी सिर्फ एक ही रणनीति है कि पार्टी के लोगों को तोड़ना और अपनी पार्टी में शामिल करना. हमारे पास जनता की शक्ति है और बीजेपी के पास तंत्र और पैसे की शक्ति है. तो यह चुनाव भाजपा के पैसे और नागरिकों की गरिमा के बीच है.

नवभारत – अभी एक को छोड़कर शेष विधानसभा भाजपा के पास है. प्रदेश में भाजपा की सरकार है. आप को उम्मीद है निर्वाचन में जनता निष्पक्ष मतदान कर सकेगी?

कमलेश्वर पटेल – प्रदेश की जनता जानती है कि किसको जिताना है. तानाशाही को जिताना है या लोकतंत्र को. जनता जानती है कि संविधान को बचाना है या गुलामी के लिए तैयार रहना. जब भाजपा का घोषणा पत्र कहता है कि मुफ्त की राशन योजना जारी रहेगी इसका मतलब साफ है कि ध्यान गरीबी हटाने पर नहीं है .अब जनता को तैयार रहना है कि उसे सम्मान के साथ जीना है या दया पर.

नवभारत – कांग्रेस लंबे समय से सत्ता से बाहर है .आपकी पार्टी के मुद्दों से जनता क्यों नही प्रभावित हो रही है ?

कमलेश्वर पटेल – जनता सब समझती है और हमें वोट भी करती है. हम जो मुद्दे उठाते हैं उससे सहमत होते हुए हमको पसंद भी करती है.

नवभारत– अगर इंडिया गठबंधन की सरकार बनी तो प्रधानमंत्री के रूप में कौन हो सकता है ?

कमलेश्वर पटेल – हमारे यहां शुद्ध रूप से लोकतंत्र है. सबकी पसंद का सम्मान होता है. दूसरे दल की तरह तानाशाही नही होती.

नवभारत– लोकसभा चुनाव का मुख्य मुद्दा आप की नजर में या है ?

कमलेश्वर पटेल – बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार मुख्य मुद्दे हैं जिन पर भाजपा की केंद्र सरकार पूरी तरह से फेल हो गई है. इन मुद्दों को गायब करने के लिए दूसरे मुद्दों को जनता के सामने लाया जाता है लेकिन अब यह मुद्दे छुप नही सकते.

जनता के आशीर्वाद से सीधी संसदीय क्षेत्र को बनायेंगे पर्यटन एवं शिक्षा का हब : डॉ. राजेश मिश्रा

शिक्षा, स्वास्थ्य, रेल, हवाई सेवा की सुविधा के साथ पर्यटन उद्योग के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराने होंगे सार्थक प्रयास

(आमने-सामने)

आदित्य सिंह

सीधी. जनता के आशीवर्वाद से सीधी संसदीय क्षेत्र को बेहतर आवागमन साधनों के साथ पर्यटन एवं शिक्षा का हब बनायेंगे. क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, रेल, हवाई सेवा की सुविधा के साथ पर्यटन उद्योग, औद्योगिक ईकाई के माध्यम से बेरोजगारों को रोजगार, स्वरोजगार उपलब्ध कराने के सार्थक प्रयास किये जायेंगे. नवभारत से खास मुलाकात में सीधी लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी डॉ0 राजेश मिश्रा ने नवभारत के सवालों के जबाब देते हुये उक्त बातें कही.

सवाल – जबाब के अंश

नवभारत – आपको पार्टी में इतनी बड़ी जिम्मेदारी के लिए अवसर दिया इसके लिए आप किसके प्रति आभार व्यक्त करना चाहेंगे ?

डॉ.राजेश मिश्रा – भारतीय जनता पार्टी द्वारा इतनी बड़ी जो जिम्मेदारी दी है उसके लिये मैं पार्टी के शीर्ष नेतृत्व देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ क्षेत्र की जनता (जिनके स्नेह और आशीर्वाद से जन सेवा करने का यह अवसर मिला है) उसके लिए सभी का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहूंगा.

नवभारत – आपको प्रदेश और विंध्य के पिछड़े जिले का नेतृत्व करने का अवसर मिलता है तो आपकी दृष्टि से क्षेत्र के विकास का स्वरूप क्या होगा ?

डॉ.राजेश मिश्रा – प्रदेश में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो सीधी जिले से भी पिछड़े है. यदि यहाँ हम सीधी संसदीय क्षेत्र की बात करें तो सीधी लोकसभा क्षेत्र में शामिल सिंगरौली जिला जो कि उर्जाधानी है, जहाँ कई आद्यौगिक ईकाई है. यह जरूर है कि सीधी संसदीय क्षेत्र का प्रमुख हिस्सा सीधी जिले में विकास के क्षेत्र में कार्य करने की बहुत सारी संभावनायें हैं. जनता के आशीर्वाद से सीधी संसदीय क्षेत्र को बेहतर आवागमन साधनों के साथ पर्यटन एवं शिक्षा का हब बनाने का सार्थक प्रयास करुंगा. बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य, रेल, हवाई सेवा की सुविधा के साथ पर्यटन उद्योग के माध्यम से बेरोजगारों को स्वरोजगार एवं सीधी-ब्यौहारी क्षेत्र में औद्योगिक ईकाई की स्थापना हो जिससे युवा बेरोजगारों को रोजगार मिले जिसके लिए प्रयास होगें. संसदीय क्षेत्र सीधी में संजय टाईगर रिजर्व, दुबरी एवं बगदरा अभ्यारण्य के साथ बीरबल की जन्म स्थली घोघरा देवी मन्दिर, बाणभट्ट की तपोस्थली चन्देरेह, आदिवासी अंचल में माड़ा की गुफाएं सहित सोन नदी के ऐतिहासिक महत्व जैसी कई धार्मिक, पुरातात्विक ऐतिहासिक धरोहर और लोक कला के साथ मनमोहक हरा-भरा पर्यावरण जिसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास किया जायेगा

नवभारत – जातीय समीकरणों में उलझी चुनावी रणनीत से कैसे मुकाबला करेंगे ?

डॉ.राजेश मिश्रा – विगत 15 वर्षों से मैं सक्रिय राजनीति में हूं. इसके पूर्व समाजसेवा के क्षेत्र में कार्य करने के साथ चिकित्सक होने के नाते मरीजों की चिकित्सीय सेवा जातिगत से ऊपर उठकर की है. मैं जातीय नहीं, जनसेवा की राजनीत पर विश्वास करता है. मुझे सभी जाति, धर्म, समुदाय का समर्थन मिल रहा है.

नवभारत – भाजपा जिलाध्यक्ष का कार्यकाल पूर्ण होने के बाद आपको अंदाजा था कि पार्टी आपकों बड़ा अवसर दे सकती है ?

डॉ.राजेश मिश्रा– राजनीति में सम्भावनाओं का कोई अंत नही होता है. मुझे तो ये भी नही मालुम था कि हमें जिलाध्यक्ष का दायित्व मिलेगा. जिलाध्यक्ष कार्यकाल पूर्ण होने के बाद मुझे पार्टी द्वारा सीधी-शहडोल जिले का प्रभारी बनाने के साथ कई प्रांतों में चुनाव में जो जिम्मेदारी दी गई उसे मैंने निष्ठापूर्वक निर्वहन किया. जहाँ तक सांसद प्रत्याशी जैसे बड़े अवसर पार्टी द्वारा देने की बात है तो यह सिर्फ भारतीय जनता पार्टी में ही संभव है. जहाँ एक सामान्य से सामान्य कार्यकर्ता को बूथ से संसद तक कार्य करने का अवसर प्रदान किया जाता है.

नवभारत – पार्टी की अंदरूनी गुटबाजी से आप कैसे मुकाबला करेंगें ?

डॉ.राजेश मिश्रा – मैं कभी भी किसी गुटीय राजनीत का हिस्सा नही रहा हूँ. भारतीय जनता पार्टी एक परिवार है यहाँ ना पहले और ना अभी भी कोई गुटीय राजनीति है. मैं और सभी एकजुट होकर देश और सीधी संसदीय क्षेत्र के विकास के लिए देश यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हांथ को मजबूत करने के उद्देश्य से कार्य कर रहे हैं.

किस करवट बैठेगा राजनीति का ऊंट, गोंड वर्सेस कंवर की लड़ाई में किंग कौन!

सरगुजा लोकसभा की सियासत

चिंतामणि महाराज | शशि सिंह

सरगुजा. सरगुजा लोकसभा क्षेत्र में जातिगत समीकरण काफी मायने रखता है. सरगुजा लोकसभा में आदिवासी समुदाय एकजुट होकर मतदान करता है.राजनीतिक दलों की बात करें तो सरगुजा में बीजेपी ने हर बार कंवर समाज के प्रत्याशियों को मौका दिया है.वहीं कांग्रेस ने गोंड समाज पर भरोसा जताया.इस बार भी बीजेपी और कांग्रेस के बीच मुकाबला होना है.जिसमें कांग्रेस ने गोंड समाज के प्रत्याशी को मैदान में उतारा है. वहीं बीजेपी एक बार फिर कंवर समाज के प्रत्याशी को मौका दिया है.

छत्तीसगढ़ के सरगुजा में बीजेपी ने चिंतामणि महाराज को टिकट दिया है. चिंतामणि पहले कांग्रेस में थे,लेकिन जब विधानसभा में टिकट कटा तो वो बागी हो गए. बागी होने के बाद चिंतामणि ने बीजेपी ज्वाइन की. विधानसभा चुनाव के जब परिणाम आए तो रिजल्ट चौंकाने वाले थे,क्योंकि कांग्रेस के दिग्गज नेता टीएस सिंहदेव समेत पूरे सरगुजा से कांग्रेस का सफाया हो चुका था. पार्टी ने इस जीत के बाद चिंतामणि महाराज पर भरोसा जताते हुए उन्हें लोकसभा चुनाव में मौका दिया. वहीं कांग्रेस की बात करें तो इस बार पार्टी ने गोंड समाज की महिला नेत्री पर भरोसा जताया है. पूर्व मंत्री की बेटी शशि सिंह को कांग्रेस ने मौका दिया है.शशि सिंह के पास ज्यादा अनुभव नहीं है.उनके सामने राजनीति के मंझे हुए खिलाड़ी हैं. फिर भी कम समय में शशि सिंह ने कांग्रेस की राष्ट्रीय राजनीति में अपनी भूमिका निभाकर शीर्ष नेतृत्व का विश्वास जीता है.

आदिवासी सीट पर पिछड़ा वर्ग की संख्या अधिक– सरगुजा में इस बार ऊंट किस करवट बैठेगा ये कोई नहीं जानता. राजनीति के जानकार सुधीर पाण्डेय कहते हैं कि सरगुजा संसदीय सीट आदिवासी वर्ग के लिए आरक्षित है, लेकिन यहां आबादी अन्य पिछड़ा वर्ग की अधिक मानी जाती है. करीब 38 प्रतिशत आदिवासी मतदाता हैं. 42 प्रतिशत के करीब अन्य पिछड़ा वर्ग के मतदाता है.

कौन बिगाड़ता है कांग्रेस का खेल

वरिष्ठ पत्रकार सुधीर पाण्डेय की माने तो 2019 के चुनाव में मोदी लहर के कारण हार जीत का अंतर डेढ़ लाख मतों का था. लेकिन आंकड़े देखें तो पता चलेगा कि कांग्रेस के परंपरागत गोंड वोटर्स को गोंगपा ने अपने पाले में कर लिया था. लोकसभा चुनाव में 24400 वोट गोंडवाना गणतंत्र पार्टी को मिले थे. इस चुनाव में बीजेपी ने भी गोंड प्रत्याशी मैदान में उतारकर गोंड मतदाताओं का ध्रुवीकरण कर दिया था .जिससे कांग्रेस को भारी नुकसान हुआ था. आंकड़े बताते हैं कि गोंड वर्सेस कंवर की लड़ाई में अक्सर कांग्रेस पीछे रह जाती है. इसकी सबसे बड़ी वजह गोंडवाना गणतंत्र पार्टी रही है .गोंगपा अक्सर गोंड समाज के वोटर्स को अपने पाले में ले आती है.

महाराष्ट्र में 85+उमदराज मतदाता है सबसे अधिक

देश मे 85 साल से ऊपर के कुल मतदाताओ की संखरा 81 लाख

दिल्ली. लोकसभा चुनाव को लेकर सभी राजनीतिक दल जोर-शोर से चुनावी रण में उतर चुके हैं. इस बीच लोकसभा चुनाव से जुड़ी कुछ ना कुछ नई और रोचक खबरें पढ़ने को लगभग हर रोज मिल रही है. इस क्रम में 85 साल या इससे ज्यादा उम्र वाले मतदाताओं का डेटा सामने आया है.

इसके मुताबिक महाराष्ट्र में 85 साल या उससे ज्यादा उम्र के मतदाताओं की संख्या सबसे ज्यादा है. आंकड़ों के मुताबिक 8 अपैल तक राज्य में ऐसे 13 लाख रजिस्टर्ड मतदाता हैं. इसके बाद उत्तर प्रदेश में 10.4 लाख, बिहार में 6.6 लाख और तामिलनाडु में 6.1 लाख मतदाता इसी उम्र के हैं. पूरे देश में 85 साल से ऊपर के कुल मतदाताओं की संख्या 81.1 लाख है. महाराष्ट्र का इसमें 16 प्रतिशत का बडा हिस्सा है.

केंद्र शासित प्रदेशों में बेहद कम– केंद्र शासित प्रदेशों में सबसे कम रजिष्ट्रेशन है. लक्षद्वीप में सबसे कम मतदाता सिर्फ 109 है, जिनमें 50 पुरूष और 59 महिलाएं शामिल हैं. दादरा और नगर हवेली, दमन और दीव में 698 मतदाता हैं. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में इसी उम्र वर्ग के 1,037 मतदाता हैं.

इस उम्र में भी महिला वोटरों की हिस्सेदारी ज्यादा

इस उम्र वर्ग में देश और राज्य दोनों जगह महिला मतदाताओं की संख्या ज्यादा है. पूरे देश में ऐसे 81 लाख मतदाताओं में से 47.3 लाख यानी 58 प्रतिशत महिलाएं हैं. वहीं पुरूषों की संखया 33.8 लाख है. महाराष्ट्र में महिला मतदाताओं का कुल मिलाकर करीब 48 प्रतिशत हिस्सा है, लेकिन 85 साल से ऊपर वाले मतदाताओं में ये आंकड़ा कुल का 56 प्रतिशत हो जाता है. राज्य में इस उम्र वर्ग के 5.7 लाख पुरूष मतदाता हैं और 7.3 लाख महिला मतदाता हैं. महाराष्ट्र में 85 साल से ऊपर वाले मतदाताओं की ज्यादा संख्या राज्य में लोगों की लंबी उम्र दिखाती है. इस साल चुनाव आयोग ने इस उम्र वर्ग के लोगों को घर बैठे वोट देने की सुविधा दी है.

80 पलस वोटर यहां है अधिक

राज्य	पुरूष	महिला	कुल
महाराष्ट्र	5.7	7.3	13
उत्तर प्रदेश	4.1	6.2	10.4
बिहार	2.9	3.7	6.6
तामिलनाडु	2.9	3.1	6.1
राजस्थान	1.8	3.8	5.7
पश्चिम बंगाल	1.9	2.8	4.8
देश में	33.8	47.3	81.1

(सभी आंकड़े लाख में हैं)

इसी उम्र के सबसे कम वोटर

राज्य-यूटी	पुरूष	महिला	कुल
लक्षद्वीप	50	59	109
दा-न, द-द*	200	498	698
अंडमान-निको	581	456	1.037
लद्दाख	819	751	1,570
सिक्किम	1,418	1,018	2,436

(दादरा-नागर हवेली, दमन-दीव)

महाराष्ट्र में प्रकाश आंबेडकर को मिला ओवैसी का साथ

मुंबई. एआईएमआईएम अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने वंचित बहुजन अघाड़ी (वीबीए) नेता प्रकाश आंबेडकर को अपनी पार्टी का समर्थन देने की घोषणा की है, जो महाराष्ट्र की अकोला सीट से लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं.

असदुद्दीन ओवैसी ने कहा, ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) और वीबीए ने 2019 के लोकसभा चुनावों के लिए गठबंधन किया था, लेकिन उस साल के अंत में हुए महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के दौरान गठबंधन टूट गया. हमारा मानना है कि दलितों का नेतृत्व सामने आना चाहिए.

औवैसी ने कहा, मैं अकोला की एआईएमआईएम टीम से प्रकाश आंबेडकर के लिए वोट करने की अपील करता हूं. प्रकाश आंबेडकर डॉ. बी आर अम्बेडकर के पोते हैं. ओवैसी ने कहा कि एआईएमआईएम पुणे से आगामी लोकसभा चुनाव लड़ेगी और अनीस सुंडके की उम्मीदवारी की घोषणा की है. ओवैसी ने मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जारांगे तक भी पहुंचने की कोशिश करते हुए कहा, पतली काया वाले एक व्यक्ति ने राज्य सरकार को हिला दिया है. ओवैसी ने आगे कहा, मैं उम्मीद कर रहा था कि जारांगे एक राजनीतिक पार्टी बनाएंगे.

एमआईएम प्रत्याशी उतारा तो मुस्लिम वोटों का होगा ध्रुवीकरण

धुलिया मे वंचित बढ़ाएगी भाजपा की मुश्किल

धुलिया. 2024 का लोकसभा चुनाव धुलिया लोकसभा क्षेत्र में खास और कड़ा होने वाला है. कांगेस, वंचित बहुजन आघाड़ी और एमआईएम, भाजपा के खिलाफ मैदान में होंगे. वोटों के विभाजन से भाजपा को कितना लाभ होगा, यह तो चुनाव के बाद ही पता चलेगा, लेकिन मुस्लिम कार्ड पर सभी की निगाहें टिकी हुई है, अगर एमआईएम ने मुस्लिम उममीदवार मैदान में नहीं उतारा तो भाजपा के सांसद सुभाष भामरे की डगर मुश्किल होगी.

धुलिया लोकसभा क्षेत्र के मालेगांव गामीण में मतदाता उनसे नाराज बताए जा रहे हैं. कोरोना के समय मालेगांव में महामारी पूरे चरम पर थी,उस समय भामरे ने कहा था

कि मालेगांव के मरीजों को धुलिया के सरकारी अस्पताल में भर्ती न करें, बल्कि जिला सीमा को सील कर दें. इस बयान पर हंगामा भी हुआ था. इस चुनाव में

मालेगांव, सिाना में भामरे की हालत खराब बताई जा रही है.माना जा रहा है कि वंचित ने मुस्लिम समुदाय के सीट के बंटवारे के लिए पूर्व आईपीएस अधिकारी अबुरहमान को उम्मीदवार के रूप में मौका देकर सीट बंटवारे की रणनीति शुरू कर दी है. चर्चा होने लगी है कि इस रणनीति से भाजपा और कांग्रेस के प्रत्याशी कुछ हद तक प्रभावित होंगे.

जातीय समीकरणों पर जोर– वंचित बहुजन आघाड़ी ने उम्मीदवार रहमान के जरिए मुस्लिम, दलित और आदिवासी समुदाय को आकर्षित करने की कोशिश की है. इसके अलावा, एमआईएम उम्मीदवार देने की कोशिश कर रही है. यदि ऐसे जातीय समीकरण निर्वाचन क्षेत्रों मे बुने जाते हैं तो यह भाजपा और कांग्रेस के लिए कुछ हद तक हानिकारक हो सकता है. जातीय समीकरण को देखते हुए बीजेपी ने मराठा-पाटिल समुदाय को तरजीह दी है. कांग्रेस का उम्मीदवार अभी तय नहीं हुआ है. यही हाल एमआईएम का भी है. यदि कांगेस बराबर का उम्मीदवार देती है और वंचित और एमआईएम के उम्मीदवार मैदान में आते हैं, तो चतुष्कोणीय मुकाबले में मतों का विभाजन अपरिहार्य होगा. इसलिए बीजेपी और कांग्रेस प्रत्याशियो के सामने जातीय समीकरण का खतरा रहेगा. उसमे से वे कैसे जीत हासिल करते हैं, इस पर सभी की निगाहे टिकी हुई है. मराठा-पाटिल समुदाय किस उम्मीदवार को पसंद करता है, इस पर भी सबकी नजर रहेगी.

विशेष | **इस बार सभी आठ विधानसभा क्षेत्र चुनौती पूर्ण हैं लेकिन उनमें भी दो और चार नंबर की चुनौती सबसे कठिन है**

दो और चार नंबर की बढ़त कांग्रेस के लिए लोकसभा में सबसे बड़ी चुनौती

कैलाश विजयवर्गीय | रमेश मेंदोला | मालिनी गौड

इंदौर. कांग्रेस के लिए विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 2 और विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 4 सबसे अधिक चुनौती पूर्ण हैं. लोकसभा चुनाव में इन दोनों विधानसभा क्षेत्र से जो लीड मिलती है वह भाजपा के लिए अजेय साबित होती है. क्षेत्र क्रमांक 4 को भाजपा की अयोध्या कहा जाता है. इस विधानसभा सीट पर कांग्रेस अंतिम बार 1985 में विजय हुई थी, तब पार्टी के नंदलाल माटा ने भाजपा उम्मीदवार को हराया था. अन्यथा 1990 के बाद से यहां भाजपा को ही सफलता मिलती रही है.

1990 में यहां से कैलाश विजवर्गीय जीते थे. 1993, 98 और 2003 में यहां से स्वर्गीय लक्ष्मण सिंह गौड़ ने विजय पताका फहराई. 2005 लखन दादा के नाम से लोकप्रिय लक्ष्मण सिंह गौड़ का एक सड़क हादसे में दुखद निधन हो गया. उसके बाद हुए चुनाव में उनकी पत्नी मालिनी गौड़ लड़ी और जीती. मालिनी गौड़ लगातार चार चुनाव से क्षेत्र क्रमांक चार में जीत रही हैं. क्षेत्र क्रमांक 4 ऐसा क्षेत्र है जहां माना जाता है कि कांग्रेस का प्रत्याशी हारने के लिए लड़ रहा है.

कैलाश विजयवर्गीय और रमेश मेंदोला के कारण ऐसी ही स्थिति अब क्षेत्र क्रमांक 2 की हो गई है. एक समय क्षेत्र क्रमांक 2 में भाजपा तीसरे नंबर पर आती थी. क्षेत्र क्रमांक 2 को भाजपा के गढ़ में बदलने की शुरुआत विष्णु प्रसाद शुक्ला बड़े भैया की उम्मीदवारी से प्रारंभ हुई. बड़े भैया यहां से 1985 और 1990 में लड़े. हालांकि दोनों चुनाव में उन्हें पराजय मिली लेकिन उनके प्रयत्नों के फल स्वरुप यह क्षेत्र धीरे-धीरे भाजपा के गढ़ में परिवर्तित होता गया. 1993 के बाद कैलाश विजयवर्गीय ने यहां का राजनीतिक चरित्र पूरी तरह से बदल दिया. कैलाश विजयवर्गीय 1993 के बाद 1998 और 2003 का चुनाव भी यहीं से लड़े. 2008 में उन्होंने यह सीट अपने मित्र रमेश मेंदोला के लिए छोड़ी और खुद महू से चुनाव लड़ने के लिए चले गए. 2008,2013, 2018 और 2023 में यहां से रमेश मेंदोला जीते. 2013 के चुनाव में रमेश मेंदोला की जीत का अंतर एक लाख से ऊपर का था, 2023 में भी उन्होंने एक लाख से अधिक मतों से जीत दर्ज की. उन्होंने सबसे अधिक वोटों से जीतने का प्रदेश स्तरीय सर्वकालिक रिकॉर्ड बनाया. पिछले चुनाव में भी रमेश मेंदोला 61000 मतों से जीते थे. विधानसभा क्षेत्र में 4 की तरह विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 2 में भी कांग्रेस के लिए बड़ी चुनौतियां रहती हैं. दो नंबर और चार नंबर में भाजपा को इतनी बढ़त मिल जाती है कि उसको पटना कांग्रेस के लिए मुश्किल हो जाता है. वैसे तो कांग्रेस के लिए इस बार सभी आठ विधानसभा क्षेत्र चुनौती पूर्ण हैं लेकिन उनमें भी दो और चार नंबर की चुनौती सबसे कठिन है.

नव भारत सियासत – इंदौरीलाल

इंदौर की प्रमुख समस्याएं

शहर के व्यापारियों को जीएसटी को लेकर समस्या रहती है. जीएसटी के खिलाफ व्यापारी हमेशा आंदोलन करते हैं और कई बार भाजपा नेताओं को भी ज्ञापन दे चुके हैं. यहां के व्यापारियों और उद्योगपतियों को रंगदारी वसूलने को लेकर भी परेशानी रहती है. व्यापारियों की समस्या के अलावा इंदौर में आजकल अवैध नशे का व्यापार भी खूब बढ़ गया है. इस कारण से अपराध भी बढ़ गए हैं. इन समस्याओं के अलावा इंदौर की सबसे बड़ी समस्या जल निकासी और यातायात की है. इंदौर अत्यंत घनी आबादी वाला क्षेत्र है. प्रति व्यक्ति वार्षिक आय अन्य जिलों की तुलना में अधिक होने के कारण यहां वाहनों का विस्फोट है. इस कारण से शहर के 40 फ़ीसदी हिस्से में यातायात की समस्या बेहद जटिल रहती है. जल निकासी को लेकर भी इंदौर में पिछले 50 वर्षों में कोई ठोस काम नहीं हुआ है. इस वजह से थोड़ी सी बारिश में पानी भर जाता है. ग्रामीण क्षेत्र में किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य ना मिलना. खराब सड़कें इत्यादि की समस्याएं हैं. ग्रामीण क्षेत्र के मुकाबले शहर में समस्याओं का अंबार लगा हुआ है हालांकि स्वच्छता में अव्वल आने के कारण शहर को लेकर यहां के नागरिकों में गर्व का भी भाव है.